नरोड़ा आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज (हिंदी विभाग)

बी.ए.सेम-5 हिंदी

पेपर-303, आधुनिक हिन्दी गद्य का इतिहास

अभ्यासक्रम-वर्ष-2020-2021

प्रस्तुतकर्ताः डॉ.करसन रावत

Semester-5 Hindi Paper no. 303

पेपर- आधुनिक हिन्दी गद्य का इतिहास (1950 तक)

(समयः 1850 से 1950 तक)

पाठ्य क्रम

युनिट- 1 कथा साहित्य

1. कहानीः उद्भव और विकास
2. उपन्यासः उद्भव और विकास
3. प्रेमचंदः कहानीकार के रूप में
4. त्यागपत्र (जैनेन्द्रकुमार) - कृति परिचय

युनिट- 2 नाट्य साहित्य

1. नाटकः उद्भव और विकास
2. एकांकीः उद्भव और विकास
3. रामकुमार वर्माः एकांकीकार के रुप में
4. आषाढ़ का एक दिन (मोहन राकेश) – कृति परिचय

युनिट – 3 निबंध एवं आलोचना

1. निबंधः उद्भव और विकास
2. आलेचनाः उद्भव और विकास
3. प्रतापनारायण मिश्रः निबंधकार के रुप में
4. हिन्दी साहित्य की भूमिका(आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी)-
   - कृति परिचय

युनिट – 4 अन्य गद्य विधाएँ

1. संस्मरणः उद्भव और विकास
2. रेखाचित्रः उद्भव और विकास
3. आत्मकथाः उद्भव और विकास
4. आवारा मसीहा (विष्णु प्रभाकर) – कृति परिचय

सहायक गंथः

1. आधुनिक साहित्य – नंददुलारे वाजपेयी
2. हिन्दी गद्यः विन्यास और विकास – रामस्वरुप चतुर्वेदी
3. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. ओमप्रकाश गुप्त
   डॉ. विरेन्द्रनारायणसिंह

4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – सं. डॉ. नगेन्द्र

कहानी की परिभाषाः

- अमेरिका के कवि-आलोचक-कथाकार 'एडगर एलिन पो' के अनुसार कहानी की परिभाषा इस प्रकार हैः

"कहानी वह छोटी आख्यानात्मक रचना है, जिसे एक बैठक में पढ़ा जा सके, जो पाठक पर एक समन्वित प्रभाव उत्पन्न करने के लिये लिखी गई हो, जिसमें उस प्रभाव को उत्पन्न करने में सहायक तत्वों के अतिरिक्त और कुछ न हो और जो अपने आप में पूर्ण हो।"

- रामदेव आचार्य कहानी का अर्थ देते हुए लिखते है कि

" कहानी का अर्थ है, जिन्दगी के एक हिस्से से अन्तरंग पहचान जताना। अनुभव की दराजों से सही वस्तु चुनना और उसे शिल्प की तल्खी देना। "

- प्रेमचंद की परिभाषाः

कहानी (गल्प) एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास, सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। उपन्यास की भाँति उसमें मानव-जीवन का संपूर्ण तथा बृहत रूप दिखाने का प्रयास नहीं किया जाता।

हिन्दी कहानी का विकास

कहानी कहने और सुनने की प्रवृति बहुत आदिम है। भारतीय साहित्य में वैदिक साहित्य से लेकर पुराणों-उपनिषदों, जातक कथाओं और पंचतंत्र आदि में कहानी के पुराने स्वरुप को देखा जा सकता है।

" कहानी का अर्थ है, जिन्दगी के एक हिस्से से अन्तरंग पहचान जताना। अनुभव की दराजों से सही वस्तु चुनना और उसे शिल्प की तल्खी देना। "

(रामदेव आचार्यः हिन्दी साहित्य का इतिहास)

हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास

- **कहानी का उद्भव**

रानी केतकी की कहानी- इंसा अल्ला खाँ (1803), प्रणयिनी परिणय -किसोरीलाल गोस्वामी(1887), इन्दुमती- किसोरीलाल गोस्वामी, दुलाइवाली- बंगमहीला, ग्यारह वर्ष का समय – आ. रामचंद्र शुक्ल

हिन्दी कहानी का विकास

1
- **प्रथम चरण**
- **(सन् 1870 से 1915 तक)**

2
- **द्वितीय चरण**
- **(सन् 1915 से 1935 तक)**

3
- **तृतीय चरण**
- **(सन् 1935 से 1950 तक)**

1

- प्रेमचंद पूर्व युग
- (सन् 1882 से 1918 तक)

2

- प्रेमचंद युग
- (सन् 1918 से 1937 तक)

3

- प्रेमचन्दोत्तर युग
- (सन् 1937 से 1950 तक)

आधुनिक हिन्दी कहानी का प्रारंभ

हिन्दी की पहली कहानी

- 'इंदुमती'-आ.रामचंद्र शुक्ल (1900 ई॰)
- ग्यारह वर्ष का समय'आ.रामचंद्र शुक्ल (1903 ई॰)
- माधवप्रसाद सप्रे की 'टोकरी भर मिट्टी' (1907 ई॰)
- किशोरीलाल गोस्वामी 'प्रणयनी परिणय' (1897)

आधुनिक हिन्दी कहानी का विकास

हिन्दी कहानी के विकास का प्रथम चरणः

- मन की चंचलता (माधवप्रसाद मिश्र) 1907 ई॰
- गुलबहार (किशोरीलाल गोस्वामी) 1902 ई.,
- पंडित और पंडितानी (गिरिजादत्त वाजपेयी) 1903 ई.,
- दुलाइवाली (बंगमहिला) 1907 ई.
- विद्‌या बहार (विद्‌यानाथ शर्मा) 1909 ई.,
- राखीबंद भाई (वृन्दावनलाल वर्मा) 1909 ई.,
- ग्राम (जयशंकर 'प्रसाद') 1911 ई.,
- सुखमय जीवन (चंद्रधर शर्मा गुलेरी) 1911 ई.,
- रसिया बालम (जयशंकर प्रसाद) 1912 ई.,
- परदेसी (विश्वम्भरनाथ जिज्जा) 1912 ई.,
- कानों में कंगना (राजाराधिकारमणप्रसाद सिंह)1913 ई.,
- रक्षाबंधन (विश्वम्भरनाथ 'कौशिक') 1913 ई.
- _उसने कहा था (चंद्रधर शर्मा गुलेरी) 1915 ई.,

आधुनिक हिन्दी कहानी का विकास

हिन्दी कहानी के विकास का दूसरा चरणः
(प्रेमचंद और प्रसाद का योगदान)

❑ **कहानीकार जयशंकर प्रसादः**

'गुण्डा' के बाबू नन्हूक सिंह जैसे व्यक्ति चरित्र की सृष्टि अराष्ट्रीय चेतना छायावादी काव्य के एक वैशिष्टय हैं। 'पुरस्कार' जैसी कहानियों में देखा जा सकता है। मन का गहन अन्तर्द्वन्द्व तो इनकी कहानी का मूलाधार है। 'आकाशदीप' इसका जीवंत उदाहरण है। प्रगीतात्मकता के सभी तत्त्व – अत्यधिक धनत्वपूर्ण वेदना, एकतानता आदि के लिए विसाती द्रष्टव्य हैं।

❑ **कहानीकार प्रेमचंदः**

इस देश के मध्यवर्गीय समाज को वैविध्य के साथ कहानियों में चित्रित करने का प्रयत्न किया है ।
सन 1916 ई॰, प्रेमचंद की पहली कहानी 'सौत' प्रकाशित हुई। प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी का कथा-साहित्य समाज-सापेक्ष सत्य की ओर मुड़ा। प्रेमचंद की आखिरी कहानी 'कफन' 1936 ई॰ में प्रकाशित हुई और उसी वर्ष उनका देहावसान भी हुआ।
'पूस की रात' और 'कफन' में उनके बदले हुए दृष्टिकोण तथा नई संरचना को देखा जा सकता है।

हिन्दी कहानी के विकास का तीसरा चरण: उग्र, जैनेन्द्र, यशपाल और अज्ञेय का योगदान

सन 1922 ई. में उग्र का हिन्दी-कथा-साहित्य में प्रवेश होता है। कुरूपताओं पर तीखा प्रहार किया। दोजख की आग, चिन्गारियाँ, बलात्कार, सनकी अमीर, चाकलेट, इन्द्रधनुष आदि उनकी सुप्रसिद्ध कहानियाँ हैं। इन कहानियों को अमर्यादित और विघातक बताया गया है।

27-28 ई. में जैनेन्द्र ने कहानी लिखना आरंभ किया। उनकी पहली कहानी खेल (सन 1927 ई) विशाल भारत में प्रकाशित हुई थी। फाँसी (1928 ई.) वातायन (1930 ई.) नीलम देश की राजकन्या (1933 ई.), एक रात (1934 ई.), दो चिड़ियाँ (1934 ई.), पाजेब (1942 ई.), जयसंधि (1947 ई.) आदि उनके कहानी संग्रह हैं। उनके आगमन के साथ ही हिन्दी-कहानी का नया उत्थान शुरू होता है। जैनेन्द्र मन की परतें उघाड़ते हैं और उसके माध्यम से सत्यान्वेषण का प्रयास करते हैं। कहानियों के माध्यम से सत्यान्वेषण का यह प्रयास पहली बार जैनेन्द्र की कहानियों में दिखाई पड़ता है। जैनेन्द्र का कहना है – कहानी तो एक भूख है जो निरंतर समाधान पाने की कोशिश करती है।

हिन्दी कहानी के विकास का तीसरा चरणः

= यशपाल और अज्ञेय का योगदान

यशपाल मूलत प्रेमचंद की परम्परा के कहानीकार हैं। '1936 ई॰ में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हो चुकी थी। इस समय के लेखकों की रचनाओं में प्रगतिशीलता के तत्त्व का जो समावेश हुआ उसे युगधर्म समझना चाहिए। यशपाल राष्ट्रीय संग्राम के एक सक्रिय क्रांतिकारी कार्यकर्ता थे। मार्क्स के साथ ही इन पर फ्रायड का भी गहरा प्रभाव है। फलत यौन-चेतना के खुले चित्र भी इनके कहानी उपन्यासों में मिलेंगे। इनके दर्जनों कहनी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं - पिंजड़े की उड़ान, वो दुनिया, ज्ञानदान, अभिशप्त, तर्क का तूफान, भस्मावृत चिन्गारी, फूलों का कुर्ता, उत्तमी की माँ आदि।

अज्ञेय प्रयोगधर्मी कलाकार हैं। उनके आगमन के साथ कहानी नई दिशा की ओर मुड़ी। जिस आधुनिकता बोध की आज बहुत चर्चा की जाती है उसके प्रथम पुरस्कर्ता अज्ञेय ही ठहरते हैं- काव्य में भी, कथा-साहित्य में भी। उनकी आरंभिक कहानियों में रोमानी विद्रोह दिखाई पड़ता है। लेकिन क्रमश वे रोमांस से हटते गये। उनकी श्रेष्ठ कहानियों में उनके अहं ने दखल नहीं दिया है। इसलिये वे अपनी संश्लिष्टता में अपूर्व बन पड़ी है। विपगाथा (1937 ई॰), परंपरा (1944 ई॰), कोठरी की बात (1945 ई॰), शरणार्थी (1947 ई॰), जयदोल (1951 ई॰) और ये तेरे प्रतिरूप उनके कहानी संग्रह हैं। पहले दोनों संग्रहों की कहानियों में अहं का विस्फोट और रोमानी विद्रोह है। शरणार्थी की कहानियाँ बौद्धिक सहानुभूति से प्रेरित होने के कारण रचनात्मक नहीं बन पड़ी हैं। पर जयदोल संग्रह की कहानियाँ अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। इस संग्रह की अधिकांश कहानियों में अहं पूर्णत विसर्जित है। अपने से हट कर उसकी दृष्टि में समग्रता और रचना में संश्लिष्टता आ गई है। उदाहरणार्थ उनकी दो कहानियों को (गैंग्रीन-रोज और पठार का धीरज) देखा जा सकता है। 'गैंग्रीन' मध्यवर्गीय जीवन की एकरसता का जबरदस्त प्रतीक है।